संदर्भिका

1.उद्देश्य

2.भूमिका

3. जनांकिकीय संक्रमण का अर्थ

4. जनांकिकीय संक्रमण का सिद्धांत

5. जनांकिकीय परिवर्तन की अवस्थाएं

6. संभावित प्रश्न

7.संदर्भ सूची

उद्देश्य

- प्रस्तुत पाठ का मुख्य उद्देश्य जनांकिकीय संक्रमण की अवधारणा को स्पष्ट करना।
- जनसंख्या के सिद्धांत के महत्त्व का ज्ञान देना।

भूमिका

- जनांकिकी संक्रमण सिद्धान्त समाज आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के विभिन्न स्तरों से सम्बन्धित जनसंख्या वृद्धि को स्पष्ट करता है कि किस प्रकार प्रजननता के जैविक प्रारूप का आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रारूप में परिवर्तन होता है। इस सिद्धांत के प्रतिपादक डब्ल्यू. एम. थोम्पसन (1929) और फ्रेंक. डब्ल्यू. नोएस्टीन (1945) हैं। इन्होंने यूरोप, आस्ट्रेलिया और अमेरिका में प्रजनन और मृत्यु–दर की प्रवृत्ति के अनुभवों के आधार पर यह सिद्धांत दिया।

- **जनांकिकी संक्रमण से तात्पर्य**
- जनांकिकी संक्रमण का तात्पर्य जनांकिकी में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तन से है। जो मनुष्य के जन्म, जीवन, और मत्यु जैसे जैविक घटकों के पारस्परिक किया से संबद्ध हैं जिससे इस तथ्य पर प्रकाश पड़ता है
- जब से मनुष्य की पर आया है उसकी संख्या में कब, कैसे और कितनी वृद्धि व ह्रास हुआ।
- जनसंख्या परिवर्तन विभिन्न अवस्थाओं में होती हैं। और प्रत्येक जनसंख्या,
- प्रत्येक अवस्था से गुजरता है।
- विकास की प्रक्रिया का जनसंख्या के प्राकृतिक परिवर्तन पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत उच्च प्रजनन दर से न्यून प्रजनन दर और उच्च मृत्यु दर से न्यून मृत्यु दर के जन सांख्यिकीय प्रतिमान को दर्शाता हैं। जनांकिकीविद् इसे 'जनसंख्या चक्र' तथा भूगोलवेत्ता इसे 'जनांकिकी संक्रमण' की संज्ञा देते हैं । समाज में अधिकांशतः ग्रामीण, कृषीय, अनपढ़ वर्ग, मुख्य रूप से नगरीय, औधोगिक, साक्षर, और आधुनिक समाज वर्ग की ओर अग्रसर होता है, तभी तीन स्पष्ट घोषित प्राकल्पनाएं सामने आती हैं।

(१) जनन क्षमता में ह्रास से पूर्व मृत्यु–दर में कमी आना।

(२) मृत्यु–दर से सामंजस्य बनाए रखने के लिए प्रजनन दर में अन्ततः कमी हो जाना।

(३) समाज में आर्थिक,सामाजिक परिवर्तन उसके जनसांख्यिकीय रूपान्तरण के साथ–साथ होना।

टिवार्था महोदय ने जनांकिकीय परिवर्तन की तीन अवस्थाएं बताई हैं–

- पूर्व औद्योगिक व्यवस्था,
- प्रारंभिक पश्चिम अवस्था

  पूर्व द्वितीय अवस्था
  मध्य द्वितीय व्यवस्था
  उत्तर द्वितीय अवस्था
- उत्तर पश्चिम अवस्था

जन्म एवं मृत्यु दरों के आधार पर **थाम्पसन एवं नोटेस्टीन** जनानिकीय संक्रमण तीन अवस्थाओ को वर्णन किया। जिसे **हैगेट महोदय** ने चार अवस्थाओं में वर्णित किया।

पश्चिमी देशों में जहां जन्म मृत्यु दर दोनों पूर्णता बराबर उनके आधार पर संक्रमण माडल को पांच भागों में बांटा जा सकता है ।जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की विशेषता इसकी सुस्पष्ट संक्रमण अवस्थायें हैं , जो ऊंची जन्म दर और ऊंची मृत्यु–दरों से न्यून दरों की ओर संक्रमण को पांच भागों में विभाजित करती हैं।

प्रथम अवस्थाः– उच्च एवं अस्थिर जन्म और मृत्यु–दर और धीमी जनसंख्या वृद्धि दर।

द्वितीय अवस्थाः– उच्च जन्म–दर एवं गिरती मृत्यु–दर और तीव्र जनसंख्या वृद्धि।

तृतीय अवस्थाः– कम होती जन्म–दर और न्यून मृत्यु–दर और कम होती जनसंख्या।

चतुर्थअवस्थाः– निम्न जन्म और मृत्यु–दर, धीमी जनसंख्या वृद्धि।

जनांकिकीय संक्रमण पांच अवस्थाएं

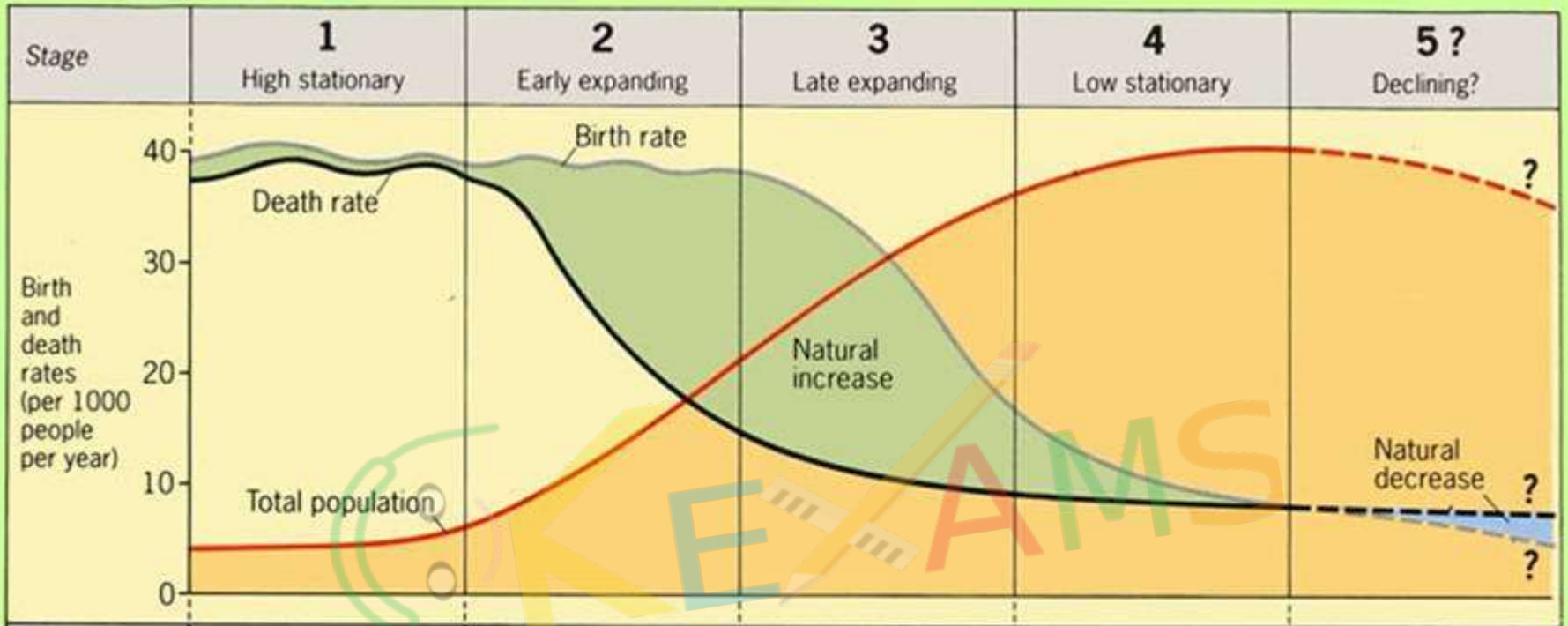

Stage	1 High stationary	2 Early expanding	3 Late expanding	4 Low stationary	5? Declining?
Examples	A few remote groups	Egypt, Kenya, India	Brazil	USA, Japan France, UK	Germany
Birth rate	High	High	Falling	Low	Very low
Death rate	High	Falls rapidly	Falls more slowly	Low	Low
Natural increase	Stable or slow increase	Very rapid increase	Increase slows down	Stable or slow increase	Slow decrease
Reasons for changes in birth rate	Many children needed for farming. Many children die at an early age. Religious/social encouragement. No family planning.		Improved medical care and diet. Fewer children needed.	Family planning. Good health. Improving status of women. Later marriages.	
Reasons for changes in death rate	Disease, famine. Poor medical knowledge so many children die.	Improvements in medical care, water supply and sanitation. Fewer children die.		Good health care. Reliable food supply.	

प्रथम अवस्था – इस अवस्था को जनसंख्या वृद्धि की अस्थिर अवस्था कहा जा सकता है । इस अवस्था में जन्मदर व मृत्युदर दोनों ही प्रकृति पर आधारित होती है, अतः इसमें कभी धनात्मक तो कभी ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि होती है । इस अवस्था में जन्मदर व मृत्युदर दोनों ही 30 से 35 प्रति हजार के बीच होती है । यह उन देशों की विशेषता है, जहाँ समाज का ढाँचा परंपरावादी है । कृषि संबंधी समाजों मे यह अवस्था होती है।इस अवस्था में शिक्षा और तकनीकी ज्ञान का अभाव, अति सीमित नगरीय विकास, हांता हैं। सामाजिक–आर्थिक पिछड़ेपन के कारण इस प्रकार के समाजों में उच्च जन्मदर व उच्च मृत्युदर मिलती है ।

द्वितीय अवस्था – इस अवस्था को जनसंख्या विस्फोट या संक्रमण की अवस्था भी कहते हैं । विश्व के अधिकतर विकासशील देश इसी अवस्था में हैं। इस अवस्था वाले देशों में बेरोजगारी, अशिक्षा, बुनियादी सेवाओं की कमी, खाद्यान्न की कमी आदि की समस्या प्रमुख होती है। चिकित्सा–सुविधा के विस्तार से जन्मदर में वृद्धि एवं मृत्युदर में कमी इस अवस्था की प्रमुख विशेषता होती है । सामान्यतः जन्मदर 40 से 50 प्रति हजार एवं मृत्युदर 15 से 20 प्रति हजार के बीच होती है । सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में विशेष अंतर नहीं होने के कारण जन्मदर में अपेक्षित कमी नहीं आ पाई। द्वितीय अवस्था के विकास क्रम में जन्म दर में घीरे–धीरे ऋणात्मक होने लगती हैं।

तृतीय अवस्था – इस अवस्था में जनसंख्या वृद्धि दर पुनः कम, आयु संरचना की पुनः संशोधन से प्रोढ वर्ग की जनसंख्या अधिक। ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात परिवर्तन नगरीय अनुपात में वृद्धि हुई। साक्षरता में प्रसार, छोटे परिवार के प्रति जागरूकता एवं बढ़ते हुए सामाजिक–आर्थिक विकास के कारण जन्मदर–मृत्युदर में कमी आती है। जन्मदर 20 से 30 प्रति हजार तथा मृत्युदर 10 से 15 प्रति हजार होता है।

भारत भी 1991 ई. में इस अवस्था में प्रवेश कर गया है । इजरायल, पुर्तगाल, न्यूजीलैण्ड, जापान, स्पेन, चिली आदि इस अवस्था में आते देश हैं

चतुर्थ अवस्था – जनसंख्या व संसाधनों के मध्य संतुलन व संशोधन प्रगति की दिशा, से जनसंख्या वृद्धि की स्थिर अवस्था है । इस अवस्था में जन्मदर 10 से 15 प्रति हजार एवं मृत्युदर 10 से कम प्रति हजार होती है।

यह अवस्था विकसित समाजों में दृष्टिगत है । G–8 के देश सिंगापुर, हांगकांग, पश्चिमी यूरोप के देश आदि इसी अवस्था में आते हैं । भारत के इस अवस्था में पहुँचने की संभावना 2021 ई. तक है

अन्तिम अवस्था – इसी अवस्था में जनसंख्या की संरचना में गुणात्मक परिवर्तन के कारण इसे *जनांकिकी– क्रांति* (*Demographic Revolution*) भी कहते हैं। **कोलिन क्लार्क** ने ऋणात्मक वृद्धि की अवस्था कहा है, क्योंकि पारिवारिक संस्थाओं एवं विवाह जैसे मूल्यो के पतन के कारण जन्मदर, मृत्युदर से भी कम रहता है । 1970 ई. के बाद इस तरह की प्रवृत्ति देखी गई है । यह एक प्रकार से 'जातीय संहार' या *'जनांकिकी अपरदन* (*Demographic Erosion*)की अवस्था' कही जाती है। मानव जीवन मूल्य में वृद्धि, उच्च जीवन स्तर, निम्न बाल विवाह दर, शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी ज्ञान में वृद्धि होने से प्राविधिक क्रान्ति *का जन्म* इसी अवस्था में होता है। स्विट्जरलैंड, बेल्जियम, आइसलैंड आदि देश एवं विकसित देशों के नगर एवं महानगर इस अवस्था में है ।

विश्व के अधिकतर देशों में जनांकिकी के इस सिद्धांत को आधार बनाकर जनांकिकी आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रम बनाए हैं । परंतु कई बार सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ जनसंख्या वृद्धि से सीधा सम्बंध नहीं रखती है जैसे चीन में तुलनात्मक रूप से सामाजिक आर्थिक पिछड़ापन के पश्चात भी राजनीतिक व प्रशासनिक प्रयासों से जन्म दर और मृत्यु दर पर नियंत्रण रखा गया है। जबकि अरब देशों इस्लामी देशों में तीव्र आर्थिक प्रगति के पश्चात भी धार्मिक कारणों से जन्म दर बना हुआ है। भारत इस प्रक्रिया मे प्रयासरत है।